वाचन के प्रकार

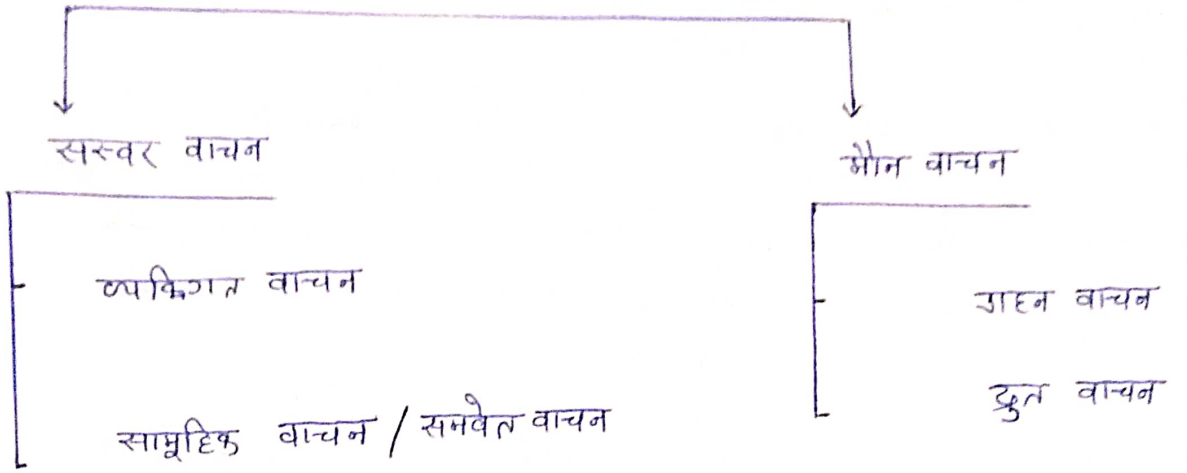

सस्वर वाचन का अर्थ :-

स्वर सहित वाचन को सस्वर वाचन कहा जाता है। इसमें छात्र पढ़ने के साथ-साथ बोलता भी जाता है। इसमें चार प्रतिक्रियाएँ सम्मिलित हैं—
१ लिखित अक्षरों को देखना २ पहिचानना ३ शब्दों को समझना
४ उच्चारण करना ५ अर्थ ग्रहण करना।

सस्वर वाचन में सावधानियाँ

① सस्वर पाठ करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि विद्यार्थी ध्वनियों का निर्दोष और स्पष्ट उच्चारण करें।

② जो शिक्षक या विद्यार्थी सस्वर पाठ करें उन्हें इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि उनकी आवाज सम्पूर्ण कक्षा में सुनाई दे अर्थात पढ़ने वाले का स्वर न बहुत धीमा हो न बहुत तेज या ऊँचा हो।

③ सस्वर पाठ खड़े होकर ही करना चाहिए।

④ सस्वर पाठ के समय पुस्तक बायें हाथ में रखनी चाहिए।

⑤ पुस्तक आँखों से कम-से-कम 30 c.m की दूरी पर रहनी चाहिए।

⑥ पुस्तक इस प्रकार पकड़ी जाए कि वह हाथ से 135° का कोण बनाए।

(7) सस्वर पाठ में स्वर सदैव एक रूप नहीं रहना चाहिए, बल्कि स्वर में उतार-चढ़ाव, आरोह-अवरोह होना चाहिए। यह वाणी का उतार-चढ़ाव अवतरण में निहित भावों के अनुकूल ही होना चाहिए।

(8) इस प्रकार अवसर के अनुकूल वाचन में भावों के स्पष्टीकरण, भावभंगिमा हाथ द्वारा संकेत भी करने चाहिए।

(9) सस्वर पाठ के लिए कुछ विद्यार्थी विशेष रूप से अधीरता दिखलाते हैं, अथवा ये हैं, बहुत से विद्यार्थी पढ़ने हेतु एक साथ खड़े हो जाते हैं, अथवा ये विद्यार्थी एक साथ ही पढ़ने की अनुमति चाहते हैं। इस समय शिक्षक को कक्षा के अनुशासन को ध्यान में रखना चाहिए, और सस्वर पाठ के लिए उपयुक्त विद्यार्थी से कहना चाहिए।

(10) जब शिक्षक सस्वर पाठ करें, उस समय उसे एक दृष्टि में इतना ग्रहण कर लेना चाहिए कि वह बीच-2 में मुँह उठाकर सामने बैठे हुए विद्यार्थियों की ओर देख सकें।

(11) सस्वर पाठ में शब्दों का उचित चुनाव महत्वपूर्ण है। पढ़ने में अर्थ अभिव्यक्ति की रक्षा करना भी अत्यन्त आवश्यक है।

(12) सस्वर पाठ के लिए पहले कुछ सुपाठ करने वाले विद्यार्थियों का चयन करना चाहिए। इसके साथ पिछड़े हुए विद्यार्थियों से सस्वर पाठ कराया जाना चाहिए।

(13) विद्यार्थी सस्वर पाठ में जो भूलें करें, उन भूलों का समाधान शिक्षक को अन्य विद्यार्थियों के सहयोग और अपने आदर्श पाठ द्वारा करना चाहिए।

(14) मन्द स्वर से ही पढ़ने की शुरुआत करनी चाहिए तथा मन्द स्वर से ही आदि और अन्त का ठीक-ठीक ज्ञान हो सके।

(15) शिक्षक को सस्वर पाठ के लिए विद्यार्थियों को एक निश्चित क्रम में नहीं चुनना चाहिए बल्कि कक्षा के बीच से किसी भी विद्यार्थी को पढ़ने के लिए कहना चाहिए।

(16) विद्यार्थी को सीधे खड़े होकर ही सस्वर पाठ करना चाहिए। झुककर खड़े होना या हाथ पैर हिलाना आदि आदतें सस्वर पाठ में अवांछनीय हैं।

सस्वर वाचन के उद्देश्य

(a) छात्रों को वाक्य-रचना का ज्ञान कराना तथा उन्हें विभिन्न लेखन-शैलियों से अवगत कराना।

(b) छात्रों को लिपि का स्पष्ट ज्ञान कराना तथा उनके शब्दों, मुहावरों के भण्डार में वृद्धि करना।

(c) छात्रों को मानव जीवन के विभिन्न पक्षों का सामान्य ज्ञान कराना।

(d) छात्रों को गद्य का स्पष्ट अक्षरोच्चारण, शुद्ध शब्दोच्चारण, उचित ध्वनि निर्गम एवं भावानुकूल बल तथा प्रवाह के साथ सस्वर वाचन के लिए प्रशिक्षित करना।

(e) छात्रों को लिखित सामग्री के केन्द्रीय भाव को ग्रहण करने और उसकी समीक्षा में प्रशिक्षित करना।

(f) छात्रों को कविता का लयानुसार वाचन करने हेतु प्रशिक्षित करना।

सस्वर वाचन के गुण

उत्तम सस्वर वाचन के गुण निम्न प्रकार हैं—

(1) छात्रों को विभिन्न ध्वनियों का ज्ञान तथा समान ध्वनियों में अन्तर करने की सामर्थ्य होनी चाहिए।

(2) वाचन स्पष्ट होना चाहिए। इसके लिए स्वर पर नियन्त्रण आवश्यक है। प्रत्येक वर्ण का उच्चारण पृथक् रूप में किया जाना चाहिए। वाचन इतनी जोर से किया जाना चाहिए कि सभी श्रोता सुन लें।

(3) वाचन ~~करते समय उ~~ करने में उच्चारण की शुद्धता पर विशेष ध्यान देने चाहिए।

(4) वाचन करते समय मुद्रा शिष्ट एवं शोभनीय हो। दूसरे शब्दों में वाचन करते समय झुककर पढ़ना, मेज पीटना, उंगलियों को नचाना, सिर हिलाना आदि अशोभनीय क्रियाएँ हैं।

(5) वाचन में प्रवाह का ध्यान रखा जाना चाहिए। न तो बहुत मन्द गति से पढ़ना चाहिए और न ही बहुत तीव्र गति से।

(6) वाचन करते समय शब्दों का अर्थ ग्रहण करते चलना चाहिए।

(7) पढ़ने में विराम चिह्नों का पूर्ण ध्यान रखना जाना चाहिए। 'मारो मत जाने दो', वाक्य में यदि मारो के बाद विराम करके पढ़े

तो एक अर्थ होगा और यदि मत के बाद विराम करके पढ़े तो दूसरा अर्थ होगा।

⑧ वाचन के समय स्वर कर्कश नहीं होना चाहिए वरन् मधुरता के साथ सरल ढंग से शब्दों का उच्चारण किया जाना चाहिए। श्रृंगार रस की सामग्री का वाचन वीभत्स ढंग से अथवा ओजपूर्ण ढंग से नहीं किया जाना चाहिए।

⑨ वाचक को स्वयं भी पढ़ने में रुचि लेनी चाहिए। वाचन को व्यर्थ कार्य समझकर टालना नहीं चाहिए।

⑩ पढ़ते समय उपयुक्त बलाघात पर ध्यान दिया जाना चाहिए अर्थात् प्रत्येक अक्षर और शब्द पर क्या योग्य बल देना चाहिए।

सस्वर वाचन के प्रकार

⇒ सस्वर वाचन के गुण के आधार पर दो प्रकार

१ अध्यापक द्वारा आदर्श वाचन

२ छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन

- जब पाठ्य-सामग्री को अध्यापक स्वयं वाचन करके छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करता है तो उसे वाचन कहते हैं, इसके निम्न उद्देश्य हैं —

१ छात्रों को अपरिचित पाठ्य-सामग्री का परिचय देना।

२ उनके समक्ष वाचन का एक मानदण्ड प्रस्तुत करना।

३ उन्हें यह समझाना कि उन्हें कहाँ तक पढ़ना है।

४ उनमें झिझक एवं संकोच की भावना को दूर करना।

५ उन्हें उचित उच्चारण, गति, लय, ~~विचार~~ विराम, स्पष्टता आदि का ध्यान रखते हुए वाचन करने की प्रेरणा देना।

निष्कर्ष

पाठशाला में प्राथमिक स्तर पर बच्चों के वाचन सम्बन्धी समस्याओं को सुधारने के लिए पहले सस्वर वाचन और बाद में मौन वाचन सिखाया जाए, ध्यान रहे प्राथमिक स्तर (I-V) तक के विद्यार्थियों को को वाचन संबंधी सुधार के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक वाचन ही कराना उचित है।